दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-HL9

निर्धारित समयः तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंकः 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): DIPTI DEO

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 16/10/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 9 7 4 0 6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

*इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।*

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 98½

टिप्पणी (Remarks): प्रयास संतोषजनक है। उत्तरों को और बेहतर बनाने का प्रयास करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

पूरा प्रश्नपत्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

हल करने का प्रयास करें

A3

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) नाथ-साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

आदिकाल में नाथ साहित्य का प्रादुर्भाव हुआ। यह परम्परा नाथ संतो द्वारा विकसित की गयी। इसमें नाथो ने अपनी मान्यताओं को व्यक्त किया। खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप इस परम्परा में परिलक्षित होता है।

नाथ साहित्य में खड़ी बोली अपनी ध्वनि संबंधी विशेषताओं के साथ दिखायी पड़ती है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है:

"जाणि के अजाणि होइ, बात तूं ले पछाणि।
चेला होआ लाभ होइगा। गुरु होइगा हाणि।"

स्पष्ट है कि इस भाषिक परम्परा में खड़ी बोली की ध्वनिगत विशेषताएँ जैसे 'न' का 'ण' एवं अकारान्तता की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है।

खड़ी बोली की व्याकरणिक विशेषताए अभी अपना विकास नहीं कर सकी थी, किन्तु इनका भी दर्शन नाथ साहित्य में किया जा सकता है —

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"नाथ बोले अमृत वाणी,
बरसैगी कम्बली भीजैगा पाणी।"

इस नाथ-वाणी में वाक्य रचना तथा, ध्वनिगत विशेषताएं—दोनो खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप का परिचय कराती है।

स्पष्ट है कि आदिकाल जिस प्रकार हिन्दी साहित्य की आने वाली विशेषताओं को बीज रूप में धारण करता है ठीक उसी प्रकार नाथ साहित्य भी खड़ी बोली हिन्दी की भाषिक क्षमताओं का आरंभिक परिचय करता है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था

कारक व्यवस्था किसी भाषिक व्यवस्था में उस आधारभूत ढाँचे को कहते है जिसके आधार पर विभिन्न पद, वाक्य मे अपना निश्चित संबंधयुक्त स्थान ग्रहण करते हैं।

अपभ्रंश का काल संस्कृत से हिन्दी की ओर संक्रमण का काल रहा है। इसकी कारक व्यवस्था कहीं-कहीं संस्कृत की सविभक्तिक व्यवस्था के साथ निर्विभक्तिक प्रयोगों से होता हुआ अंततः परसर्गों के विकास पर आधारित है।

सविभक्तिक प्रयोगों में 'हिं' विभक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इससे सभी कारकों का काम चलाया जाता है। जैसे -

"राजा गारिहिं बोले नाहीं चरणोदक ले सिरहिं चढ़ावा।" ('गारिहिं' → 'करण', 'सिरहिं' → 'अधिकरण')

यहाँ 'हिं' विभक्ति से करण कारक को द्योतित किया गया है।

निर्विभक्तिक प्रयोगों में कारकीय पद अपने मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं। न तो किसी परसर्ग के साथ न ही किसी विभक्ति के साथ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश में स्वतंत्र 'पर-सर्गों' का विकास आरंभ हो गया था। अभी कर्ता कर्म व करण के लिए सों, से, सेति सम्प्रदान-अपादान के लिए ताहि लो इत्यादि परसर्गों के साथ अधिकरण के लिए मांझि इत्यादि परसर्ग प्रयुक्त होते थे।

उदा०

'युवराजन्ह माँझि ताहि केरो पुत्र।"
(माँझि — अधिकरण)

अतः स्पष्ट है कि अपभ्रंश की कारक व्यवस्था सरलीकरण की यात्रा का आरंभिक पड़ाव है। यह यात्रा खड़ी बोली हिन्दी में आकर पूर्ण होती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी भाषा और 'केंद्रीय हिन्दी निदेशालय'

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय संघीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के अधीन एक संस्थान है। इसकी जिम्मेदारी राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास की है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम जैसे 'प्रबोध' 'प्रवीण', एवं 'कुशल' इत्यादि चलाता है। यह विभिन्न सरकारी विभागों को हिन्दी प्रयोग का लक्ष्य निर्धारित कर देता है साथ ही उसके अनुपालन की समीक्षा भी करता है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन के लिए विभिन्न पुरस्कारों का वितरण भी करता है। 'आत्माराम पुरस्कार' महत्वपूर्ण पुरस्कार है जो हिन्दी भाषा के तकनीकि विकास के लिए दिया जाता है। इस वर्ष यह पुरस्कार जी बालेन्दु दाधीच को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिया गया है।

यह संस्थान विभिन्न महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों को वहन करने के बावजूद अभी अपने वास्तविक लक्ष्यों की प्राप्ति मे सफल नहीं रहा है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित है-

1- बजट की कमी
2- शक्तियो (दण्ड) की कमी
3- कर्मचारियों में प्रेरणा का अभाव
4- दृढ़ इच्छाशक्ति की कमी

अत: हम देखते है कि केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय संघ सरकार के अधीन हिन्दी प्रचार का महत्वपूर्ण संस्थान है किन्तु कुछ सीमाओ से युक्त है। आवश्यकता दृढ़ इच्छाशक्ति की है जिससे राजभाषा हिन्दी के विकास का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

हिन्दी विरोध और समर्थन के विभिन्न आन्दोलनों के बीच 1963 में संघ सरकार ने राजभाषा अधिनियम पारित किया गया।

राजभाषा अधिनियम -1963 के द्वारा संविधान के अनु॰ 343 को संशोधित किया गया। इसमे 'हिन्दी एवं अंग्रेजी' का अंश, जिसको या अंग्रेजी' वाला अंश 1965 के पश्चात समाप्त होना था, अनंत काल के लिये बढ़ा दिया गया।

वस्तुत: इस अधिनियम को पारित करने की आवश्यकता हिन्दी विरोध आन्दोलन के कारण पड़ी। तमिलनाडु और अन्य दक्षिण भारतीय राज्यों ने स्वतंत्रता के पश्चात हिन्दी को राजभाषा बनाए जाने का विरोध किया गया। संविधान के अनु॰ 343 में लिखा गया कि 'संघ की राजभाषा हिन्दी एवं अंग्रेजी होगी।' इसके साथ परन्तुक जोड़ा गया कि संविधान के आरंभ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के 15 वर्षों बाद (यानि 1965) या
अंग्रेजी वाले अंश का लोप हो जाएगा।
इसी लोप को लेकर आन्दोलन चलाया
गया और संघ सरकार को इन आंदोलनो
के सामने झुकने को बाध्य किया गया।
और राजभाषा अधि॰ 1963 पारित हुआ।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में अवधी के विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकालीन आर्यभाषाओं में अवधी का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी की विकास यात्रा में यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। अवधी का मूल क्षेत्र लखनऊ, बाराबंकी फैजाबाद इत्यादि प्राचीन कोशल का क्षेत्र है।

अवधी का विकास दो सुयोगों के द्वारा माना जाता है। पहला सुयोग सूफी प्रेमाख्यानकारों द्वारा अपनी मान्यताओं के प्रचार के लिए अवधी के चुनाव से माना जाता है। सूफी प्रेमाख्यानकार मुल्ला दाऊद ने 'चंदायन' की स्वयं विशेषता बताते हुये कहा-

'दाऊद कवि जों चांदा गाई
जो रे सुना सो गा मुरझाई।"

वस्तुतः अवधी की ठेठ, ग्रामीण व बेमेल मिठास तो मलिक मुहम्मद जायसी की रचना 'पद्मावत' में दिखायी पड़ती है। 'खंगरा' जैसे ठेठ अवधी परम्परा के शब्दों के साथ 'पुहुमी' और 'पृथमी'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे अपभ्रंश व तद्भव शब्दों ने ठेठ अवधी के काव्यमय रूप को प्रतिष्ठित किया।

जायसी की लोक जीवन तक गहरी पैठ थी। यही दृष्टि अवधी को और समृद्ध करती है। लोक मुहावरों का प्रयोग जायसी की काव्य भाषा की अप्रतिम क्षमता हो (सीधी अँगुरि न निकसे घीऊ')।

जायसी के बिंब भी लोक-जीवन से ही बनते है। नागमती के विरह-वर्णन के बिंब द्रष्टव्य है:-
"जेठ जरै जग बहै लुआरा उठे बवंडर धिकै पहारा"

अत: स्पष्ट है कि सूफी प्रेमाख्यान परम्परा में अवधी की ठेठ व बेमेल मिठास दिखायी पड़ती है। आचार्य शुक्ल जी ने इसी आधार पर जायसी का नाम बराबर लिए जाने' की घोषणा की थी।

अवधी के संदर्भ में दूसरा सुयोग राम-काव्य-धारा का आरंभ था। इस काव्य धारा में तुलसी का आगमन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अवधी के दूसरे भाग्योदय के समान है। तुलसी ने 'रामचरितमानस' की रचना के द्वारा अवधी को काव्य भाषा के उस ऊँचे स्तर को पाने का अवसर दिया जो किसी भी भाषा के लिए एक मानक हो।

तुलसी ने अवधी की समृद्धि संस्कृत की पदावली से की। आचार्य शुक्ल ने जायसी व तुलसी की तुलना इसी आधार पर की है। तुलसी की पहुँच को 'संस्कृत की दीर्घ कवि परम्परा द्वारा संचित चाशनी के भंडार तक' घोषित किया।

ऐसा नहीं कि तुलसी ने अवधी का संस्कृतकरण किया हो। तत्सम शब्दों को अकारान्त या अन्य परिवर्तनों से अवधी के शब्द के अनुरूप परिवर्तन किया। जैसे सुगामिनी का हंस गवनि इत्यादि।

तुलसी ने अवधी की बिंब समता का चरम विकास किया। उदा.

राम को रूप निहारति जानकी कंगन के नग की-
परछाई / याते सबै सुधि भूल गयी, कर टेके

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रही पल टरत नाहीं।"

इसके अतिरिक्त भाव के अनुसार ध्वनि तरंगों के प्रयोग में उन्हे महारत हासिल थी। उदा॰ -

"शिथिल अंग पग डग-मग डोलहिं
विह्वल बचन प्रेम बस बोलहिं।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि काव्यभाषा के रूप मे अवधी मध्यकाल में अपनी क्षमताओं के चरम स्तर को प्राप्त की। किन्तु मर्यादापूर्ण अभिव्यक्ति के लिए विशेषीकृत होने के कारण रीतिकाल मे रीतिवादी दृष्टिकोण के आने के साथ काव्यभाषा के रूप में संकुचित हुयी।

11½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवहट्ट' को एक स्वतंत्र भाषा मानने के औचित्य पर विचार करते हुए अवहट्ट की शब्दकोशीय विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शब्द कोष की सम्पन्नता भाषा की क्षमता के स्तर को बताता है। अवहट्ट के संदर्भ में यह विवाद है कि यह अपभ्रंश से स्वतंत्र एक 'भाषा' है या उसकी समानार्थी? शब्दकोषीय विशेषताओं के परीक्षण के आधार पर इसका निर्धारण किया जा सकता है।

अवहट्ट के शब्दकोष को हम 4 भागों में विभाजित कर सकते है

1. तद्भव
2. देशज
3. तत्सम
4. विदेशज

तद्भव : अवहट्ट में संस्कृत से विकृत शब्दों की अधिकता है। सरलीकरण की प्रक्रिया में संस्कृत शब्दों में परिमार्जन के साथ भाषा में प्रयोग से तद्भव शब्दों की संख्या बढी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2- देशज शब्द: देशज शब्दो मे मुख्यत: ध्वन्यर्थ शब्दों के साथ ही स्थानी परम्परा मे प्रयुक्त शब्दों को शामिल किया जा रहा था। अपने क्षेत्रीय विस्तार की प्रक्रिया में अवहट्ट मे देशज शब्दों का प्रयोग बढ़ा था। घूंघट, खरहा इत्यादि शब्द अवहट्ट के देशज परम्परा से है।

3- तत्सम: संस्कृत से ज्यो के त्यों स्वीकृत शब्द अवहट्ट में मिलते है इसके अतिरिक्त तद्भवीकरण की प्रक्रिया में शब्दो के मध्य जटिलता आयी अत: पुन: तत्समीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुयी।

4. विदेशज: विदेशी संस्कृतियों से आदान प्रदान के साथ भाषा मे शब्दों का भी आदान प्रदान होता है अवहट्ट में रुमाल इत्यादि शब्द विदेशज है।

अत: हम कह सकते है कि अवहट्ट शब्दकोषीय दृष्टि से समृद्ध भाषा है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अवहट्ट स्वतंत्र भाषा है या नहीं?

किसी बोली को भाषा का दर्जा तब दिया जाता है जब वह किसी काल और क्षेत्र विशेष में साहित्य सृजन का माध्यम रही हो। अवहट्ट इस दृष्टिकोण से निम्नलिखित तर्कों के आधार पर भाषा के मानक पर खरी है-

1. क्षेत्रीय विस्तार- पश्चिमोत्तर भारत
2. कालिक विस्तार- 1100 - के आस पास
3. साहित्य- पाहुड दोहा, णायकुमार चरिउ इत्यादि

अतः अपभ्रंश को काव्यभाषा का दर्जा दिया जाना उचित होगा। एक कवि ने इसके महत्व को यूं बताया है

सक्कयवाणी बहुजण भावै पाउअ रस को मम्म न पावै / देसिल बअणा सब जण मिट्ठा, तैंतैं सम जंपौ अवहट्टा।"

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के विकास में राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द' के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

हिन्दी अपने जिस रूप में आज राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के स्तर पर प्रतिष्ठित है वह भिन्न-भिन्न संस्थाओ और व्यक्तियों के अथक प्रयासो पर आधारित है। आधुनिक काल मे शिव प्रसाद सितारेहिन्द ने न केवल हिन्दी भाषा वरन देवनागरी लिपि को प्रतिष्ठित स्थान दिलाया।

राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद ने हिन्दी के उस रूप की प्रतिष्ठा की जिसकी महात्मा गांधी ने 'हिन्दुस्तानी' कहकर राष्ट्रभाषा बनाए जाने की मांग की। इन्होने हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि को पं मदन मोहन मालवीय के साथ मिलकर संयुक्त प्रान्त मे न्यायालय एवं कार्यालय की भाषा बनवाने के लिए आंदोलन चलाया। फलस्वरूप हिन्दी और देवनागरी न्यायालय की भाषा बनी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके अतिरिक्त राजा सितारेहिन्द ने हिन्दी भाषा को उर्दू फ़ारसी के सामान्य बोलचाल के शब्दों से समृद्ध किया। राजा शिवप्रसाद के विरोधी दृष्टिकोण रखने वाले राजा लक्ष्मण सिंह ने संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का प्रयोग किया।

अतः स्पष्ट है कि राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने हिन्दी के हिन्दुस्तानी रूप की प्रतिष्ठा की वह परम्परा चलायी जिसपर आगे भारतेन्दु तथा प्रेमचन्द जैसे साहित्यकारों का उदय हुआ और हिन्दी भाषा तथा साहित्य दोनों समृद्ध हुये।

7/15

और उदाहरण लाएं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि अपने ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में विभिन्न वैयक्तिक एवं संस्थागत प्रयासों के फलस्वरूप मानक लिपि के रूप मे प्रतिष्ठित है। किन्तु, कुछ सीमाओं के कारण मानकीकरण के पुनः प्रयास की आवश्यकता है।

वर्णमाला के स्तर पर : देवनागरी की वर्णमाला अत्यंत बड़ी है जिसमें कुछ ध्वनियों का उच्चारण या तो हम विस्मृत कर चुके हैं या फिर उनका संशोधन किया जा चुका है। जैसे

स्वर – ऋ, ॠ, ऌ, ॡ
व्यंजन – 'श' एवं 'ष'

अतः तार्किकीकरण के आधार पर रि (ऋ) ऋ री किया जाना चाहिए। इसके साथ ही 'श' एवं 'ष' में भी एकरूपता है। किन्तु इसे यथावत बने रहने दिया जाना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शिरोरेखा : देवनागरी मे शिरोरेखा के स्तर पर भी अवैज्ञानिकता तथा अमानकता के आरोप लगे है। शिरोरेखा को लेखन से हटा दिया जाना चाहिए किन्तु टंकण में होनी चाहिए।

संयुक्ताक्षर : व्यंजन संयोगों में समस्या है इस स्तर पर देवनागरी में वैज्ञानिकता का अभाव है अतः निम्नलिखित सुझावों के आधार पर वैज्ञानिकता लाने का प्रयास किया जाना चाहिए .

1. जहाँ प्रथम व्यंजन 'र' हो वहाँ 'रेफ' (र्) लगाया जाना चाहिए जैसे सर्प

2. जहाँ 'र' द्वितीय व्यंजन हो —
   a. यदि आदि व्यंजन खडी पाई वाला क ख इत्यादि हो तो 'र' का निशान खड़ी पाई से जोड़ा जाना चाहिए क्रेता, ग्राहक इत्यादि
   b. यदि बिना खड़ी पाई वाला हो तो ट्रक इत्यादि लिया जाना चाहिए

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्वनिम के स्तर पर : ध्वनि संकेतों को स्वनिम कहते है।

देवनागरी में एक ध्वनि के लिए एक वर्ण एक एक वर्ण से एक ध्वनि की मानकता अभी नहीं है –

अ – अ, अ
झ – झ, झ
ल – ल, ल

अतः इनकी द्विरूपता समाप्त कर मानक रूप क्रमशः अ झ व ल का प्रयोग किया जाए।

अतः स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि मानकीकरण के उपरोक्त सुझावों के आधारों पर एक वैज्ञानिक एवं मानक लिपि के स्तर पर जा सकती है। आवश्यकता केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं दृढ़ इच्छाशक्ति की है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास को आप संतोषजनक मानते हैं? विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधुनिक बाजार के अनुरूप शिक्षा के द्वारा कुशल मानव संसाधन के विकास हेतु व्यावसायिक शिक्षा का विकास आवश्यक है। हिन्दी भाषी क्षेत्र अपनी सर्वाधिक जनसंख्या के साथ एक बड़ा बाजार निर्मित करता है किन्तु जब इसके अनुरूप व्यावसायिक शिक्षा की बात होती है तो माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा सशक्त नजर आती है।

आधुनिक वैज्ञानिक लेखन की धुरी है - वैज्ञानिक एवं तकनीकि शब्दावली। व्यावसायिक शिक्षा के लिए पारिभाषिक शब्दावलियों के निर्माण की जिम्मेदारी वैज्ञानिक एवं तकनीकि शब्दावली आयोग की है। यह आयोग विभिन्न शब्दकोषों के माध्यम से शब्दावली निर्माण का कार्य कर रहा है। व्यावसायिक शिक्षा मुख्यतः तकनीकि, चिकित्सा एवं व्यवसाय प्रबंधन के साथ फैशन, पर्यटन इत्यादि क्षेत्रों तक विकसित है। इन सभी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनुशासनो के लिए आयोग शब्दावली का निर्माण कर रहा है।

प्रश्न जब संतोषजनक माने जाने का हो तो शब्दकोषो की गुणवत्ता पर भी विचार किया जाना आवश्यक होगा इस स्तर पर आयोग के कार्य पूर्ण संतोष प्रदान करने मे सीमित रह जाते है। शब्दकोषो की समृद्धि के साथ-साथ बोधगम्यता भी महत्वपूर्ण है इस स्तर पर शब्दावली आयोग के शब्दकोष सीमित सफल ही माने जा सकते है।

अतः कहा जा सकता है शब्दकोषों में व्यावसायिक शिक्षा के अनुरूप पारिभाषिक शब्दावलियाँ व्यावहारिकता को ध्यान मे रखकर बनायी जानी चाहिए। जटिलता को दूर कर इन्हे लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

6/10

बेहतर लगाने का प्रयास करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिन्दी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दक्खिनी हिन्दी का विकास मुख्यतः राजनीतिक कारको से हुआ। उत्तर से दक्षिण की ओर विभिन्न अभियानों के साथ दक्षिण मे आदिलशाही शासको ने इस बोली को संरक्षण प्रदान किया जिससे दक्खिनी हिन्दी ने अपने विकास के स्तर को प्राप्त किया।

कुली कुतबशाह विद्या व साहित्य का प्रखर संरक्षक शासक था। वह स्वयं दक्खिनी मे कविताएं करता था तथा विभिन्न लेखको का संरक्षक था। इसके अतिरिक्त इब्राहिम आदिलशाह का भी नाम दक्खिनी हिन्दी के विकास में सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने वली दक्नी को संरक्षण दिया था। वली दकनी की कविता का उदाहरणः

जिसे इश्क का तीर कारी लगे
उसे जिन्दगी क्यू न भारी लगे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः हम देखते है कि आदिलशाही वंश ने शासकों द्वारा स्वयं दक्खिनी हिन्दी में साहित्य सृजन के साथ विभिन्न विद्वानो को संरक्षण देकर इस भाषा के विकास में योगदान किया।

6/15

महत्वपूर्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) विद्यापति की राधा

आदिकालीन साहित्य हिन्दी साहित्य की सभी प्रवृत्तियो को बीज रूप मे धारण करता है। राधा-कृष्ण की भक्ति विद्यापति के यहाँ मिलती है।

विद्यापति की राधा किशोरी राधा है जिसके यौवन का श्रृंगारिक वर्णन विद्यापति ने किया है। विद्यापति के इस वर्णन पर हिन्दी साहित्य मे मतभेद विवाद है। जार्ज ग्रियर्सन ने इसे भक्तिपूर्ण रचना माना तो शुक्ल जी ने कटाक्ष करते हुए कहा कि आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल सस्ते हो गये है और लोग इसे चढ़ाकर विद्यापति की श्रृंगारिक रचनाओ को भी आध्यात्मिक मान रहे है।

विद्यापति ने राधा के वर्णन में कहीं-कहीं अश्लीलता का भी परिचय दिया है। अंगो की कांति तथा वस्त्रों के वर्णन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मे अश्लीलता झलकती है।

राधा के वर्णन में जो औदात्य सूरदास के यहाँ मिलता है वह विद्यापति में नही। विद्यापति संस्कृत के जयदेव की परम्परा से जुड़े हुये नजर आते है।

अतः स्पष्ट है कि विद्यापति के शृंगारिक एवं भक्ति मिश्रित पदों में राधा की भक्ति के साथ उनका शृंगार वर्णन भी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) मुक्त छन्द

मुक्त छंद, छंद के बंधनो से मुक्ति का रूप है। स्वछंदतावाद में जिस शास्त्र से भावों की मुक्ति की बात की गयी वही निराला के यहाँ आकार और सूक्ष्म स्तर पर उतर गयी और निराला ने छंद के बंधनो से मुक्ति की घोषणा करते हुए कहा-

"नूपुर के स्वर जब मंद रहे
क्यो न चरण स्वच्छंद रहे।"

वस्तुतः निराला भावों के कवि है। उन्होंने भावों को छंद के बंधन से मुक्त कराया। यह छायावाद की अप्रतिम उपलब्धि है।

निराला के पश्चात मुक्त छंदो का कुशल प्रयोग अज्ञेय ने किया। उन्होने सन्नाटे का छंद कविता में लिखा-
"मैं सभी ओर से खुला हूँ
वन सा वन सा अपने मे बंद हूँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैं सन्नाटे का छंद हूँ।''

सभी ओर से खुले होने की घोषणा का अज्ञेय ने न भी कविता को छंद के बंधनों से मुक्त करने की ही बात प्रकारान्तर से की।

आधुनिक कविता में भी शमशेर बहादुर मुक्तिबोध सभी ने मुक्त छंदों का प्रयोग किया है।

6/10

Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा

आधुनिक नारीवादी अस्मिता की साहित्यकारों मे मैत्रेयी पुष्पा का लेखन नारी अस्मिता को जूझती एक 'बोल्ड' लेखिका के रूप मे प्रतिष्ठित है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने लेखन के माध्यम से उस पितृसत्ता पर प्रश्नचिह्न लगाये है जो अपनी सुविधा और प्रभुता के लिए सदियो से एक व्यवस्था का निर्माण कर आयी है। इस व्यवस्था ने ही नारी के शोषण को हृदयागत रूप दिया है। इन संस्थाओ में धर्म, परिवार, विवाह इत्यादि शामिल है।

मैत्रेयी पुष्पा की रचना चाक मानवी नारी लेखन की महत्वपूर्ण कृति मानी गयी है। इस रचना मे उन्होने अपने जीवनानुभवो से संचित स्मन एवं संवेदन को रचना मे पिरोया है। यह सर्वंत विवादित कृति रही है कुछ पुरुष लेखको

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के इसमें अश्लीलता का पुट दिखता है।
अतः हम देखते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास लेखन प्रखर नारी चेतना से युक्त 'बोल्डनेस' को प्रदर्शित करता है।

10

अत्यन्त श्रेष्ठ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) घनानंद का काव्य-शिल्प

रीतिकालीन कवियों मे घनानंद स्वच्छंद कवि है। इनका काव्यशिल्प इनके भावों के अनुरूप ही रीतिकाल मे विलक्षण है।

घनानंद मुख्यतः मुक्तको के रचनाकार रहे है दरबारी माहौल में कवितायें मुक्तक रूप मे ही की जा सकती है।

काव्यभाषा के स्तर पर घनानंद ब्रजभाषा का प्रयोग करते है। उन्होंने ब्रज को उस चरम कलात्मक स्तर पर पहुँचाया जो संवेदना के द्वारा पाठक एवं भावक को अभिभूत होने पर मजबूर करती है। उदा.-

अति सूधो सनेह को मारग है
जँह नेकु सयानप बाँक नाहि
तुम कौन धो पाटि पढे हु लला
मन लेहु पै देहु छटांक नही ॥

उपरोक्त उदाहरण में ब्रज की कलात्मकता घनानंद के अलंकार के सहज प्रयोग के माध्यम से अर्थ की गंभीरता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को बढ़ा देने की क्षमता के भी कारण है।

इसी स्तर पर घनानंद अपने शिल्प के स्तर पर अन्य रीतिकालीन कवियों से पृथक नजर आते है। बिहारी का अलंकारों के लिए विशेष आग्रह हो या केशव की उक्ति वैचित्र्य, घनानंद अपने भावों के अनुरूप अलंकारों के प्रयोग के माध्यम से विशिष्ट छाप छोड़ते है।

अतः काव्य शिल्प को भावानुरूप रख घनानंद हिन्दी साहित्य मे विशिष्ट पहचान रखते है।

5 1/2

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) 'अंधा युग' नाटक का महत्त्व

धर्मवीर भारती द्वारा रचित अंधायुग। अपनी संवेदना, भाषा, रंगमंचीयता इत्यादि के कारण नाटक-परंपरा मे विशिष्ट स्थान रखता है।

संवेदना के स्तर पर अंधा युग आधुनिक भावबोध का नाटक है जो युग सत्य को पकड़ने का प्रयास करता है। दो महायुद्धों का दंश झेल चुकी मानवता के समक्ष संकट को भारती जी ने महाभारत युद्ध के पश्चात् युद्ध की जिम्मेदारी तय करने के प्रतीक के माध्यम से दिखाया है।

भाषा के स्तर पर धर्मवीर भारती की नाट्य-भाषा चरम सर्जनात्मक भाषा ठहरती है। पात्रोचित संवादो एवं गठी चुस्त, चपल, संवाद योजना के द्वारा नाटक के कसाव को निर्मित किया गया है।

अंधा युग नाटक की रंगमंचीय संभावनाशीलता भी अतीव है। चाहे पारंपरिक रंगमंच हो या आधुनिक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'ओपन एअर थियेटर' दोनो पर यह नाटक विभिन्न अवसरो पर सफलता के साथ मंचित किया जा चुका है।

~~अतः~~

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation